AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | Open Accsess & Indexed
Volume 03 | Issue 04| May 2022| *www.agpegondwanajournal.co.in* | Page No. 76-79

महावीर प्रसाद द्विवेदी और सरस्वती पत्रिका

मंजु जसैल[1*], डॉ. राम कुमार[2] एंव डॉ. शक्ती दान चारण

1. **** मंजु जसैल,*** शोधार्थी, श्री जेजेटी विश्वविद्यालय,चुड़ेला, झुन्झुनूं, राजस्थान
2. ***डॉ. राम कुमार,*** श्री. जेजेटी विश्वविद्यालय,चुड़ेला, झुन्झुनूं , राजस्थान
3. **डॉ. शक्ति दान चारण**, शोध निर्देशक, श्री. जेजेटी विश्वविद्यालय,चुड़ेला, झुन्झुनूं , राजस्थान

सारांश:

महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने सरस्वती का संपादक का कर्तव्य निभाते हुए विभिन्न विषयों और प्रवृत्तियां के साथ भाषा के नवजागरण की प्रेरणा दी। उन्होंने काव्य की भाषा में प्रचलित ब्रजभाषा स्वरूप को त्यागकर उसके स्थान पर खड़ी बोली को अपनाने को प्रेरित किया। 'सरस्वती' पत्रिका में द्विवेदी जी के एक निबन्ध से प्रेरणा पा कर मैथिलीशरण गुप्त ने साहित्य में चिर उपेक्षिता 'उर्मिला' को 'साकेत' के स्वरूप में प्रतिस्थापित किया। इस हेतु गुप्त जी ने द्विवेदी जी की ओर संकेत भी किया है-

''करते तुलसीदास भी कैसे मानस नाद्।
महावीर का यदि नहीं मिलता उन्हे प्रसाद। "

वास्तव मे 'सरस्वती' का यह योगदान हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय रहा।

मुख्य शब्द: परिमार्जित,प्रवर्तक, नवजागरण, अर्थशास्त्र, राष्ट्रप्रेम, पुनर्जागरण, उदासीनता, प्रियतम, सुसज्जित, गवर्नमेंट, खड़ी बोली, सद्भाव, जागृति, उर्मिला, साकेत, यशोधरा आदि।

प्रस्तावना:

द्विवेदी युग के प्रवर्तक कवि महावीर प्रसाद द्विवेदी का जन्म 1864 ईमें रायबरेली के दौलतपुर नामक ग्राम में . हुआ था। इन्हीं के नाम पर द्विवेदी युग का नामकरण हुआ। सरस्वती पत्रिका का संपादन1903 ई से सन् .1920 ईतक . किया। गद्य लेखन के क्षेत्र में भी इन्होंने विशेष ख्याति प्राप्त की। काव्य भाषा के रूप में खड़ी बोली को स्थान दिया एवं हिन्दी व्याकरण में सुधार कर उसका परिमार्जित रूप समृद्ध किया।

CORRESPONDING AUTHOR:	REVIEW ARTICLE
Manju Jasail Research scholar, Shri. JJT University, Jhunjhunu, Churela, Rajasthan Email: rkbchuru@gmail.com	

द्विवेदी युगीन नव जागरण चेतना :-

द्विवेदी युग का नामकरण प्रसिद्ध कवि व साहित्यकार महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम पर हुआ। इससे नवजागरण या सुधार काल भी कहा जाता है। इस युग में दो धाराएं चल रही थी अनुशासनवादी वह दूसरी स्वच्छंदवादी।अनुशासनवादी धारा साहित्य की सामाजिक सोद्देश्य को लेकर चल रही थी। देवराज पथिक कहते हैं कि जब कभी भी समाज अथवा राष्ट्र की " परंपरागत मूल धारणा को कोई समाज अथवा राष्ट्र की परंपरागत मूल धारणा किसी निश्चित लक्ष्य अथवा ध्येय के आलोक में आगे बढ़ती है तो राष्ट्रीयता की भावना जागृत होती है। इसी जागृति को राष्ट्रीय नवजागरण के नाम से संबोधित किया जाता है।"

डॉ शिवकुमार शर्मा के शब्दों में परिवर्तन युग के सबसे मह "ान युग के प्रवर्तक पुरुष एवं नायक महावीर प्रसाद द्विवेदी थे। इस युग का कोई भी साहित्यिक आंदोलन गद्य या पद्य का ऐसा नहीं जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इससे प्रभावित न हुआ हो।"

आचार्य द्विवेदी ने साहित्य के प्रति साहित्य को नैतिक जवाबदेही को स्वीकार किया श्रंगार, रीति निरुपण और काव्य के दरबारी सरोकारों को आड़े हाथों लेते हुए उन्होंने कविता के व्यापक फलक की चर्चा की, इसमें किसी भी विषय पर चर्चा की जा सकती है और इशारा किया कि चींटी से लेकर हाथी पर्यंत जीव " -, रंक से राजा पर्यंत मनुष्य, बिंदु से लेकर सिंधु पर्यंत जल, अनन्त पृथ्वी, अनन्त आकाश, अनन्त पर्वत सभी काव्य के विषय हो सकते हैं।"

द्विवेदी जी की मान्यता साहित्यिक सोउद्देश्य को प्रभावित करते हुए मैथिलीशरण गुप्त ने साहित्य को मनोरंजन ही नहीं बल्कि मानव जीवन के उद्देश्य से जोड़ने की कोशिश की है।

" केवल मनोरंजन ही न कवि का कर्म होना चाहिए।

बल्कि उसमें उचित उपदेश का मर्म होना चाहिए।इसके साथ ही दिवेदी युगीन चेतना राष्ट्रीय प्रेम ", सामाजिक चेतना, भक्ति प्रकृति और भाषा सभी स्तरों पर प्रखर दिखाई पड़ती है।

रामविलास शर्मा ने लिखा है किद्विवेदी जी ने अपने साहित्य जी" -वन के आरंभ में पहला काम यह किया कि उन्होंने अर्थशास्त्र का अध्ययन किया। द्विवेदी जी ने बहुत से विषय पर ऐसी टिप्पणियां लिख सके जो विशुद्ध साहित्यिक की सीमाएं लांघ जाती है।"

द्विवेदी युगीन रचनाकारों का राष्ट्रप्रेम भारतेंदु युग की तरह मात्र सामूहिक रुदन से नहीं जुड़ा है बल्कि समस्याओं के विचार के कारणों पर विचार करने के साथ-साथ उनके लिए समाधान ढूंढने तक जुड़ा है। गुप्त जी ने लिखा है-

"हम क्या थे क्या हो गए और क्या होंगे अभी। आओ मिलकर विचारे, यह समस्याएं सभी।"

'मॉडर्न इंडिया थॉट' में विश्वनाथ नरवणे कहते हैंपुनर्जागरण का अर्थ है नवीन आलोक भविष्य की ओर बढ़ने की एक " - क्रांतिकारी प्रेरणा' घिटे"रिवाजों की जंजीर से मुक्ति।-पिटे जिससे पीटी रीति -

द्विवेदी युगीन कवि हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने की नहीं बल्कि उत्सर्ग, त्याग और बलिदान के माध्यम से अपनी खोई हुई अस्मिता को प्राप्त करने के लिए प्रेरणा का माध्यम भी रहे है-

"देशभक्त वीरों मरने से कभी नहीं डरना होगा।

प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा।"

द्विवेदी युगीन सामाजिक समस्याएं भारतेंदु युग की तरह समस्याओं तक सीमित नहीं थी बल्कि उन समस्याओं के मूल कारणों का पता भी लगाती है। नारी समस्याओं को लेकर द्विवेदीयुगीन विभिन्न कवियों ने विशेष जागरूकता दिखाई। इस युग में न केवल इस प्रकार की समस्या को उठाया गया है बल्कि नारी की उपेक्षा को लेकर पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी ने साहित्यकारों के साथ साथ समाज का भी ध्यान आकर्षित-किया है। 'उर्मिला विषयक उदासीनता' जैसा निबंध लिखकर उर्मिला जैसी स्त्रियों की उपेक्षा समाज के द्वारा भुला दिए गए उत्सर्ग के रूप में माना।'यशोधरा' के माध्यम से गौतम बुद्ध की पत्नी का, 'साकेत' के माध्यम से उर्मिला का, विष्णु प्रिया से चैतन्य महाप्रभु की पत्नी का उत्सर्ग योजित किया गया।

सखि वे मुझसे कहकर जाते,
प्रियतम के प्राणों को पल में,
स्वयं को सुसज्जित कर के क्षण में,
भेज देती हैं रण में, क्षत्रिय धर्म के नाते,
सखि वे मुझसे कहकर जाते।

गुप्त जी के काव्य 'यशोधरा' में ऐसा नारी के त्याग और समर्पण की भावनाओं का सुंदर रूप द्विवेदी युग में ही देखने को मिल सकता है। इस युग में राम और कृष्ण बैकुंठ धाम छोड़कर जन सामान्य के कल्याण के लिए दर दर-,वनवन ठोकर - खाने वाले दिखे।'साकेत' के राम अपने आपको स्वर्ग से आया हुआ नहीं मानते हैं-

"मैं यहां नहीं आया स्वर्ग का संदेश सुनाने।
मैं तो भू तल को ही आया हूं स्वर्ग बनाने।"

द्विवेदी युगीन रचनाकारों को भी शक होने लगा है ईश्वर क्या ईश्वर नहीं है ? क्या वह मानव है?
"राम तुम मानव हो ईश्वर नहीं हो क्या?"
द्विवेदी युग में गद्य पद्य दोनों-रचनाएं रची गई दोनों की भाषा के रूप में खड़ी बोली का विकास हुआ। द्विवेदी जी ने भाषा के प्रति समन्वयकारी दृष्टि अपनाई जिससे खड़ी बोली समृद्ध हुई।
किशोरी दास वाजपेई ने लिखा है किके देखकर दर्शक पर सहसा आतंक छा उनके सुदृढ़ विशाल और भव्य कलेवर" - जाता था और यहप्रतीत होने लगता था कि मैं एक महान ज्ञान राशि के नीचे आ गया हूं।"

द्विवेदी युगीन सरस्वती पत्रिका-:

सरस्वती पत्रिका हिंदी साहित्य की रुपगुणसम्पन प्रतिनिधि साहित्यिक पत्रिका थी। इस पत्रिका का प्रकाशन इंडियन प्रेस, प्रयाग से सन् 1900 ई में प्रारंभ हुआ था। .1903 ई में महावीर प्रसाद द्विवेदी इसके संपादक बने और.1920 ईस्वी तक रहे। इसका प्रकाशन पहले झांसी से और फिर कानपुर से होने लगा। 1903 ईमें महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कार्यभार संभाला . का स्वर प्रदान किया। द्विवेदी जी ने भाषाको समृद्ध साहित्य को राष्ट्रीय चेतनाि करके के नवीन साहित्यकारों को रहा दिखाई। उनका कथन हैहमारी भाषा हिंदी है" -,इससे प्रचार के लिए गवर्नमेंट जो कुछ कर रही है, सो तो कर रही है, हमें चाहिए कि हम अपने घरों का अज्ञान तिमिर दूर करने और अपना ज्ञान बल बढ़ाने के लिए पुण्य कार्य में लग जाए।"

महावीर प्रसाद ने सन् 1920 ईस्वी तक बड़े परिश्रम और लगन से यह कार्य करते रहे। नवजागरण परक चेतना को आगे बढ़ाने में सरस्वती पत्रिका ने महती भूमिका अदा की। द्विवेदी जी के अथक प्रयासों से खड़ी बोली काव्य की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुई। दिवेदी जी की प्रेरणा से जो ब्रजभाषा में रचना करते थे वह खड़ी बोली में करने लगे। डॉ नगेंद्र के अनुसार - "'भारतभारती-' की लोकप्रियता खड़ी बोली की विजयपताका सिद्ध हुई। ब्रज भाषा की जगह खड़ी बोली को स्थापित - ती पत्रिका के माध्यम से किया। सरस्वती पत्रिका केकरने का कार्य दिवेदी जी ने सरस्वकाव्य में राष्ट्रप्रेम, आदर्शवाद, समाज सुधार, संगठन आर्य समाज, ब्रह्म समाज का प्रभाव इस पत्रिका में दिखाई देता है। इस पत्रिका में कवियों ने न केवल समस्याओं को उठाया बल्कि उनका समाधान भी बताया।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा है खड़ी बोली के विषय पर द्विवे" -दी जी का पूरापूरा असर पड़ा। बहुत से कवियों की - भाषा शीथिल और व्यवस्थित होती थी, द्विवेदी जी ऐसे कवियों की कविताओं की भाषा आदि दुरुस्त करके सरस्वती में छापा करते थे।'

'सरस्वती पत्रिका' का प्रकाशन सन्1980 ई के बाद बंद हो गया। जिस समय पत्रिका का प्रकाशन बंद .हुआ उस समय पत्रिका के संपादक निशीथ राय थे। लगभग 80 वर्षों तक यह पत्रिका निकली। अंतिम 20 वर्षों तक इस पत्रिका का संपादन पंडित श्री नारायण चतुर्वेदी ने किया। बिल्कुल अंत में निशीथ राय ने किया। इस प्रकार 40 वर्षों के अंतराल के बाद एक बार फिर सरस्वती पत्रिका का प्रकाशन जनवरी 2020 से शुरू हुआ। संपादक बने डॉदेवेंद्र शुक्ल तथा सहायक संपादक . बने अनुपम परिहार।

उपसंहार-:

हिंदी साहित्य पत्रिका 'सरस्वती' एक नवजागरण का संदेश लेकर साहित्य जगत् में आई। भारतीय जनमानस में भक्ति, स्वतंत्रता, राष्ट्र उत्थान, सद्भावना, जागृत करने का कार्य किया। सरस्वती पत्रिका का नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा संपादन शुरू किया गया। मगर इसका विकास पूर्ण रूप से द्विवेदी काल में ही हुआ।

डॉ रामविलास शर्मा ने हिंदी नवजागरण को हिंदी जाति का जागरण माना है। नवजागरण की लहर जन जन-तक पहुंचाने का कार्य सरस्वती पत्रिका के माध्यम से हुआ। जिसमें महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का विशेष योगदान रहा है।

संदर्भ ग्रंथ-:

1.विश्वनाथ नरवणेथॉटवंदे मॉडर्न इंडिया -, पृष्ठ-8
2.रामविलास शर्मा हिंदी नवजागरण और महावीर प्रसाद द्विवेदी -
3.रामचंद्र शुक्ल ह -हिंदी साहित्य के इतिहास, पृष्ठ -367
4.आ -हिंदी साहित्य का इतिहास- हजारी प्रसाद द्विवेदी .146
5.रामविलास शर्मा समकालीन भारतीय -,पृष्ठ -626
6.उदय भान सिंह महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग -, पृष्ठ -19
7.महावीर प्रसाद द्विवेदीसरस्वती पत्रिका -, जून-1912 अंक
8.देवराज पथिकनयी कविता में राष्ट्रीय चेतना -, पृ-17

■ ■ ■